



# बुनियादी शिक्षा पर गांधीजी के विचारों का अध्ययन

जयपाल सिंह<sup>1\*</sup>, डॉ. विनीता त्यागी<sup>2</sup>

1. रिसर्च स्कॉलर, श्रीकृष्ण विश्वविद्यालय, छतरपुर, म.प्र., भारत  
kyoqish221@gmail.com ,
2. प्रोफेसर, श्रीकृष्ण विश्वविद्यालय, छतरपुर, म.प्र., भारत

**सारांश:** यह शोधपत्र महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन, विशेष रूप से उनकी बुनियादी शिक्षा की अवधारणा का विश्लेषण करता है। गांधीजी का मानना था कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास नहीं बल्कि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास का साधन होनी चाहिए। उन्होंने मातृभाषा में शिक्षण, कुटीर उद्योगों पर आधारित व्यावहारिक शिक्षण, और मूल्य-आधारित शिक्षा को अत्यंत महत्व दिया। इस अध्ययन में उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों की प्राथमिक शिक्षा प्रणाली, नामांकन अनुपात, परीक्षा प्रणाली, शिक्षकों की स्थिति, और स्कूल से बाहर रहने वाले बच्चों की संख्या जैसे व्यावहारिक पहलुओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त, उत्तरदाताओं के माध्यम से गांधीजी के दार्शनिक, सामाजिक, और शैक्षिक दृष्टिकोणों की प्रासंगिकता की पड़ताल की गई है। परिणामों से स्पष्ट होता है कि गांधीवादी शिक्षा आज भी ग्रामीण विकास, आत्मनिर्भरता, और नैतिक मूल्यों की स्थापना हेतु अत्यंत प्रभावी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

**मुख्य शब्द:** शिक्षा प्रणाली, मूल्यांकन, शिक्षक, प्राथमिक, माध्यमिक विद्यालय, विश्वविद्यालय

----- X -----

## परिचय

मोहनदास के. गांधी का जन्म 1869 में पश्चिमी भारत के गुजरात राज्य में एक धार्मिक माता-पिता के घर हुआ था। उनकी शादी कस्तूरबाई मकनजी से तय हुई थी, जब वे दोनों 13 साल के थे। वे कानून की आगे की पढ़ाई के लिए लंदन गए। दक्षिणी अफ्रीका में उन्होंने अप्रवासी भारतीयों के अधिकारों को बेहतर बनाने के लिए लगातार काम किया। यहीं पर उन्होंने अन्याय के खिलाफ निष्क्रिय प्रतिरोध का अपना सिद्धांत विकसित किया, उन्होंने सत्याग्रह शुरू किया और अपने नेतृत्व वाले विरोधों के परिणामस्वरूप उन्हें अक्सर जेल भी जाना पड़ा। 1915 में अपनी पत्नी और बच्चों के साथ भारत लौटने से पहले, उन्होंने दक्षिणी अफ्रीका में रहने वाले भारतीयों के जीवन को मौलिक रूप से बदल दिया था (भारतीय समाज में उभरती शिक्षा) प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा को सामान्य रूप कहा जाता है; यहाँ कौशल के उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रावधान है। यह केवल मानसिक विकास के लिए है। लेकिन मन, शरीर और आध्यात्मिक विकास सहित बुनियादी शिक्षा को भी महत्व दिया जाता है। कुल मिलाकर यह बच्चे का सर्वांगीण विकास है।

शिक्षा की मूल अवधारणा बच्चों को गाँव के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने के लिए शिक्षित करना है। इससे गांव का विकास होता है। क्योंकि भारत गांवों का देश है। यह अवधारणा सफलता के सभी पहलुओं का मूल कारण होनी चाहिए। इसलिए इसे शिक्षा के इतिहास में मील का पत्थर कहा जाता है। इसने प्रचलित निष्क्रिय, पुस्तक-केंद्रित और परीक्षा-प्रधान प्रणाली के खिलाफ विद्रोह किया। यह ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू पारंपरिक शैक्षिक पैटर्न के खिलाफ विद्रोह करता है। गांधीजी ने पूरी तरह से महसूस किया कि पारंपरिक प्रणाली अवास्तविक और कृत्रिम है। उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है कि शिक्षा की वर्तमान प्रणाली न केवल दुखद है बल्कि सकारात्मक रूप से हानिकारक है। यहां गांधीजी की चिंता थी कि माता-पिता और बच्चों के बीच एक खाई होगी और वे जिस व्यवसाय में पैदा हुए हैं उसे समझने में भी सक्षम नहीं होंगे। गांधीजी के शब्दों में वर्तमान शिक्षा प्रणाली किसी भी आकार या रूप में देश की वर्तमान आवश्यकता को पूरा नहीं करती है। अंग्रेजी को सीखने की सभी उच्चतम शाखाओं में शिक्षा का माध्यम बना दिया गया है और इसने उच्च शिक्षित कुछ लोगों और अशिक्षित बहुतांशों के बीच एक स्थायी खाई या अवरोध पैदा कर दिया है। (शिक्षक और शिक्षा के लिए एक नया दृष्टिकोण उभरता हुआ भारतीय समाज, एम.के. गांधी)।

शिक्षा अर्थव्यवस्था के विभिन्न स्तरों के लिए जनशक्ति का विकास करती है। यह वह आधार भी है जिस पर अनुसंधान और विकास फलते-फूलते हैं, जो राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता की अंतिम गारंटी है। संक्षेप में, शिक्षा वर्तमान और भविष्य में एक अनूठा निवेश है। यह प्रमुख सिद्धांत राष्ट्रीय शिक्षा नीति की कुंजी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1992 का उद्देश्य सार्वभौमिक आधार पर एक निश्चित स्तर तक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली विकसित करना भी है। यह असमानताओं को दूर करने और शैक्षिक अवसरों को समान बनाने की भी सिफारिश करता है। उपरोक्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अलावा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित पहल विकसित की गई हैं।

- ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड (1987-88) का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों में उपलब्ध मानव और भौतिक संसाधनों में सुधार करना था।
- शिक्षक शिक्षा का पुनर्गठन और पुनर्संरचना (1987) ने शिक्षकों के ज्ञान और क्षमता के निरंतर उन्नयन के लिए एक संसाधन बनाया।

- सीखने के न्यूनतम स्तर (1991) ने विभिन्न चरणों में उपलब्धि के स्तर निर्धारित किए और पाठ्यपुस्तकों को संशोधित किया।
- प्राथमिक शिक्षा के लिए पोषण सहायता के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (1995) ने सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और स्थानीय निकाय स्कूलों के कक्षा 1-5 के बच्चों के लिए हर दिन पका हुआ भोजन उपलब्ध कराया। कुछ मामलों में न्यूनतम उपस्थिति के अधीन मासिक आधार पर अनाज वितरित किया गया।
- जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (1993) ने विकेन्द्रीकृत योजना और प्रबंधन पर जोर दिया, शिक्षण और सीखने की सामग्री में सुधार किया और स्कूल की प्रभावशीलता को बढ़ाया।
- सभी को शिक्षित करने के लिए आंदोलन (2000) का उद्देश्य सूक्ष्म नियोजन और स्कूल-मानचित्रण अभ्यासों के माध्यम से 2010 तक सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करना था, जिससे लैंगिक और सामाजिक अंतर को पाटा जा सके।
- मौलिक अधिकार (2001) में निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान शामिल था, जिसे 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मूल अधिकार घोषित किया गया।

## परीक्षा प्रणाली

परीक्षा प्रणाली के संबंध में एनपीई, 1992 में कहा गया है कि प्रदर्शन का मूल्यांकन सीखने और सिखाने की किसी भी प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। अच्छी शिक्षा रणनीति के हिस्से के रूप में, शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए परीक्षाओं का उपयोग किया जाना चाहिए। इसका उद्देश्य परीक्षा प्रणाली को फिर से तैयार करना होगा ताकि मूल्यांकन की एक ऐसी पद्धति सुनिश्चित की जा सके जो छात्र विकास का एक वैध और विश्वसनीय उपाय हो और शिक्षण और सीखने में सुधार के लिए एक शक्तिशाली साधन हो। कार्यात्मक शब्दों में, इसका अर्थ होगा।

- i. संयोग और व्यक्तिपरकता के अत्यधिक तत्व का उन्मूलन।
- ii. याद करने पर जोर न देना।
- iii. सतत और व्यापक मूल्यांकन जिसमें शिक्षा के शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक दोनों पहलुओं को शामिल किया गया हो, जो पूरे शिक्षण समय में फैला हो।
- iv. शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों द्वारा मूल्यांकन प्रक्रिया का प्रभावी उपयोग।
- v. परीक्षा के संचालन में सुधार।
- vi. शिक्षण सामग्री और कार्यप्रणाली में सहवर्ती परिवर्तनों का निषेध।
- vii. चरणबद्ध तरीके से माध्यमिक स्तर से सेमेस्टर प्रणाली का निषेध।
- viii. अंकों के स्थान पर ग्रेड का उपयोग।

उपरोक्त लक्ष्य बाह्य परीक्षाओं और शिक्षा संस्थानों के भीतर मूल्यांकन दोनों के लिए प्रासंगिक हैं। संस्थान स्तर पर मूल्यांकन को सुव्यवस्थित किया जाएगा और बाह्य परीक्षाओं की प्रधानता को कम किया जाएगा। परीक्षा निकायों के लिए दिशा-निर्देशों के एक सेट के रूप में कार्य करने के लिए एक राष्ट्रीय परीक्षा सुधार रूपरेखा तैयार की जाएगी, जिसके पास विशिष्ट स्थितियों के अनुरूप रूपरेखा को नया रूप देने और अनुकूलित करने की स्वतंत्रता होगी। अब यह महसूस किया गया है कि शिक्षा मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का मुख्य कार्य विद्वान आयोगों द्वारा की गई सिफारिशों को लागू करना है, जैसा कि ऊपर कहा गया है। भारत की समानता और विविधता के अवसरों की चिंता शिक्षा के व्यापक दायरे में परिलक्षित होती है, जो शिक्षा के सभी औपचारिक और अनौपचारिक स्तरों और रूपों को कवर करती है, जबकि शैक्षिक नीति छह से चौदह वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करती है। "सभी के लिए शिक्षा" शैक्षिक नीति का मूल जोर है, और प्रारंभिक शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है, जैसा कि देश के संविधान में निहित है।

शिक्षा की प्राथमिक आवश्यकता के रूप में मांग है, जिनमें पहले कोई शिक्षा नहीं थी। उत्तर प्रदेश राज्य ने सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास किया। ये 6-14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए उद्देश्य हैं।

1. सभी बच्चों के लिए प्राथमिक स्कूलों तक सार्वभौमिक पहुँच।
2. सार्वभौमिक नामांकन।

3. सार्वभौमिक प्रतिधारण।
4. सीखने के न्यूनतम आवश्यक स्तरों की सार्वभौमिक उपलब्धि।
5. स्कूल का सामुदायिक प्रबंधन।
6. सार्वभौमिकरण में सामाजिक समानता और क्षेत्रीयता।

राज्य सरकार की नीति है कि 100 से अधिक आबादी वाली बस्तियों में 1 किलोमीटर के अंदर प्राथमिक विद्यालय खोले जाएंगे। छोटी और कम आबादी वाली बस्तियों में फीडर स्कूल शुरू किए जाएंगे या नजदीकी प्राथमिक या उच्च प्राथमिक विद्यालयों तक परिवहन सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। राज्य की नीति है कि 1 किलोमीटर के दायरे में प्राथमिक विद्यालय, हर 3 किलोमीटर के दायरे में उच्च प्राथमिक विद्यालय और 5 किलोमीटर के दायरे में हाई स्कूल उपलब्ध कराए जाएं। जहां 3 किलोमीटर के दायरे में हाई स्कूल नहीं हैं, वहां 8वीं कक्षा जोड़कर उच्च प्राथमिक विद्यालय को अपग्रेड किया जा रहा है। 5545 के लक्ष्य में से कुल 4146 को अपग्रेड किया जा चुका है। पिछले कुछ वर्षों में पहुंच सुविधाओं में वृद्धि हुई है।

	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20
प्राथमिक विद्यालय (एलपीएस)	93.7	94.26	94.58	98.98	99.03	99.13	99.29	100
उच्च प्राथमिक विद्यालय (उच्च प्राथमिक विद्यालय)	89.39	90.48	96.25	99.19	99.61	99.61	99.07	100

उपस्थिति पंजी: प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर लड़के और लड़कियों के बीच नामांकन अनुपात 52:48 है। राज्य में लैंगिक समानता और लैंगिक समानता दोनों एकता के करीब हैं। राज्य में कक्षा I से VII तक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के बच्चों का अनुपात 27.22 प्रतिशत है और इनमें से 75.0 प्रतिशत से अधिक बच्चे राज्य द्वारा संचालित स्कूलों में नामांकित हैं। लिंग और सामाजिक समूह के लिए विस्तृत नामांकन आँकड़े परिशिष्ट में दिए गए हैं।

तालिका 1: प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर लड़के और लड़कियों के बीच

स्कूल/पर्यावरण	2017-18	2018-19	2019-20 (अंतिम)
प्राथमिक विद्यालय (संख्या में)	26644	26254	25889
उच्च प्राथमिक विद्यालय (संख्या में)	30876	32041	33000
नामांकन कक्षा I-V- कुल (लाख में)	55.42	54.6	53.27

लड़के (लाख में)	28.6	28.2	27.49
लड़कियां (लाख में)	26.82	26.4	25.78
नामांकन कक्षा VI- VII- कुल (लाख में)	20.28	19.97	19.87
लड़के (लाख में)	10.48	10.33	10.27
लड़कियां (लाख में)	9.8	9.64	9.6

सकल नामांकन अनुपात और शुद्ध नामांकन अनुपात। यह ध्यान देने योग्य है कि प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर समग्र जीएफआर अनुपात में मामूली गिरावट आई है जो एक सकारात्मक संकेत है। राज्य में लड़कों और लड़कियों के लिए शुद्ध नामांकन अनुपात क्रमशः 95.21 और 96.07, 95.01 और 95.15 प्रतिशत है। ज़िला बांदा, महोबा, झांसी उ.प्र. जैसे कुछ जिलों में शुद्ध नामांकन अनुपात ने 100 प्रतिशत का आंकड़ा पार कर लिया है क्योंकि अन्य जगहों से गणना किए गए बच्चे ज़िला बांदा, महोबा, झांसी ज़िला में चले गए हैं और शहर के स्कूलों में दाखिला लिया है।

तालिका 2: वर्ष के दौरान सकल नामांकन अनुपात और शुद्ध नामांकन अनुपात में सुधार

वर्ष	प्राथमिक स्तर		उच्च प्राथमिक स्तर	
	सकल नामांकन अनुपात	शुद्ध नामांकन अनुपात	सकल नामांकन अनुपात	शुद्ध नामांकन अनुपात
2014-15	109	97.81	117	98.11
2015-16	121.83	97.51	103.04	98.75
2016-17	108.28	98.43	107.25	98.52
2017-18	110.93	96.1	107.53	95.61
2018-19	107.15	97.33	107.48	98.09
2019-20	106.53	95.21	103.1	95.15

वर्ष 2019-20 में स्वीकृत 2,04,808 शिक्षकों में से कुल 1,90,119 शिक्षक (92.8%) शिक्षा विभाग के निम्न प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों तथा राज्य सरकार के अधीन अन्य विद्यालयों में कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त स्वीकृत 20,401 शिक्षकों में से 16,521 शिक्षक प्रारंभिक स्तर पर सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत हैं। प्रारंभिक स्तर पर सरकारी विद्यालयों में 48.5 प्रतिशत शिक्षक महिला हैं, जबकि प्रारंभिक स्तर पर शिक्षकों का अनुपात 1:22.85 है। हालांकि, जिला, ब्लॉक और विद्यालय स्तर पर भिन्नताएं देखी जाती हैं। राज्य ने इस असंतुलन को ठीक करने के लिए तर्कसंगत शिक्षक तैनाती नीति अपनाई है।

स्कूल न जाने वाले बच्चे: प्राथमिक शिक्षा में मुख्य चिंता स्कूल से बाहर रहने वाले बच्चों (ओओएससी) की है। इनमें स्कूल छोड़ने वाले और कभी नामांकित न होने वाले बच्चे शामिल हैं। राज्य ने दिसंबर 2018 में एक व्यापक घरेलू बाल जनगणना सर्वेक्षण किया, जिसमें 7 से 14 वर्ष की आयु के कुल 66,26,413 बच्चों का अनुमान लगाया गया। इन बच्चों में से 35,637 बच्चे स्कूल से बाहर रह गए, जिनमें 25,958 ड्रॉप आउट और 9,679 कभी नामांकित न होने वाले बच्चे शामिल थे। 2014 से 2018 तक आयोजित बाल जनगणना के अनुसार स्कूल से बाहर के बच्चे (ओओएससी) की संख्या पिछले कुछ वर्षों में घटती हुई प्रवृत्ति दर्शाती है। 2011-2019 के बीच यह प्रतिशत 10.22% से घटकर 0.54% हो गया है। जून 2019 में आयोजित नामांकन अभियान के दौरान 6 वर्ष और उससे कम आयु के बच्चों को मुख्यधारा में लाया गया है।

स्कूल से बाहर रहने वाले बच्चों को वापस लाने के लिए विभाग द्वारा शुरू किए गए विभिन्न कार्यक्रम और योजनाएँ

1 . बालिका शिक्षा (लैंगिक समानता): बालिका शिक्षा (लैंगिक समानता) उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उठाया गया एक बड़ा कदम है, ताकि लड़के और लड़कियों को समान शिक्षा मिले। इस कार्यक्रम का लक्ष्य अधिक से अधिक लड़कियों को स्कूल भेजना है। बालिकाओं की शिक्षा, जागरूकता और सशक्तिकरण सुनिश्चित करने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। भारत सरकार ने 2004-05 में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना शुरू की थी।

2 . स्कूल चलो अभियान: भारतीय संविधान में 6 से 14 वर्ष की आयु के प्रत्येक बच्चे को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार है। उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित "स्कूल चलो अभियान" कार्यक्रम की शुरुआत कक्षा 1 से 8 तक के अधिक से अधिक विद्यार्थियों को स्कूल में नामांकन के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से की गई है। 1 अप्रैल 2022 से शुरू हो रहे चालू शैक्षणिक वर्ष में स्कूल चलो अभियान-2022 का शुभारंभ 4 अप्रैल 2022 को श्रावस्ती जिले में मुख्यमंत्री, बेसिक शिक्षा मंत्री एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा किया गया।

3 . शारदा (स्कूल हर दिन आये, "हर दिन स्कूल आओ"): बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 के अनुसार 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी लड़के-लड़कियों को निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा का अधिकार है।

4 . निपुण मिशन और स्कूल चलो अभियान से मजबूत की शिक्षा की गुणवत्ता: निपुण मिशन के तहत बच्चों में बुनियादी साक्षरता और गणितीय ज्ञान को मजबूत करने के लिए व्यापक कदम उठाए गए। साथ ही, स्कूल चलो अभियान ने शिक्षा से वंचित बच्चों को विद्यालयों से जोड़ा, जिससे लाखों बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा में लाया गया और उनकी जीवन संवारने की दिशा तय हुई।

5 . बालिका सशक्तिकरण अभियान से संवारा भविष्य: परिषदीय विद्यालयों में सुधार के लिए बालिका सशक्तिकरण अभियान की शुरुआत की गई, जिसके अंतर्गत कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों को शिक्षा, खेल और कौशल विकास के माध्यम से उन्नत किया गया। इस अभियान के तहत 800,000 बालिकाओं को रानी लक्ष्मीबाई आत्मरक्षा प्रशिक्षण प्रदान किया गया और 125,000 बालिकाओं को पावर एंजेल के रूप में प्रशिक्षित कर सशक्त बनाया गया।

## शिक्षा प्रोफ़ाइल

जिले में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की देखरेख सार्वजनिक शिक्षा के उप निदेशक कर रहे हैं। इस जिले में बांदा, महोबा और झांसी यूपी नामक क्षेत्र हैं। यह प्रणाली निम्नलिखित योजनाओं के कार्यान्वयन की देखरेख कर रही है:

1. प्राथमिक और उच्च विद्यालय के शिक्षकों की भर्ती।
2. विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें, गणवेश और साइकिलें तथा मध्याह्न भोजन का वितरण।

यह व्यवस्था विभाग में प्राथमिक और उच्च विद्यालयों के शिक्षकों के लिए उन्मुखीकरण पाठ्यक्रमों के क्रियान्वयन की देखभाल कर रही है।

शारदा के तहत किंडरगार्टन की देखभाल कर रहा है, नए स्कूल भवनों के निर्माण, स्कूलों के उन्नयन, शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्कूलों में पेयजल सुविधाओं और शौचालयों में सुधार जैसे निर्माण कार्य द्वारा स्कूलों के मौजूदा बुनियादी ढांचे में सुधार और अन्य बुनियादी ढांचे के विकास

कार्यों को उक्त योजना के तहत कार्यान्वित किया जा रहा है।

तालिका 3: बांदा जिला के प्राथमिक विद्यालयों की सूची

क्र. सं.	तहसील का नाम	स्कूल	लड़के	लड़कियाँ	कुल योग
1	बांदा	286	16532	11015	27547
2	बबेरु	281	16642	11364	27600
3	अतर्रा	268	15421	10610	26030
4	नरैनी	139	8072	5265	13132
5	पैलानी	143	8670	5675	14345
	योग	1117	65337	43929	108654

तालिका 4: बांदा जिला के उच्च प्राथमिक विद्यालयों की सूची

क्र. सं.	तहसील का नाम	स्कूल	लड़के	लड़कियाँ	कुल योग
1	बांदा	152	10889	7259	18148
2	बबेरु	146	9872	7062	16934
3	अतर्रा	143	9682	6986	16668
4	नरैनी	72	4386	2930	7316
5	पैलानी	70	4563	3046	7609
	योग	589	39392	27283	66675

तालिका 5: उत्तरदाताओं का आयुवार वितरण

क्र. सं.	आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
01	27 वर्ष से कम	99	61.87%
02	28-37 वर्ष	37	23.12%
03	38-47 वर्ष	18	11.25%
04	48 वर्ष और उससे अधिक	06	3.75%
	कुल	160	100%

तालिका 6: उत्तरदाताओं का शिक्षा स्तर

क्र. सं.	शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
01	टीसीएच/डी एड	118	73.75
02	टीसीएच/डीएड और उससे ऊपर	42	26.25
	कुल	160	100

तालिका 7: उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

क्र. सं.	वैवाहिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
01	विवाहित	118	73.75

02	विधवा	42	26.25
	कुल	160	100%

## शिक्षा प्रणाली के बारे में गांधीवादी दृष्टिकोण जानें।

डॉ. ए. आर. सीताराम, प्राचार्य, बी.एड. अनुभाग, रामकृष्ण नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा संस्थान, मैसूर ने मूल्य शिक्षा की अवधारणा के बारे में ठीक ही बताया है, जैसा कि नीचे उल्लेख किया गया है; मूल्य शिक्षा, जैसा कि आमतौर पर उपयोग किया जाता है, शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वच्छता, शिष्टाचार और तौर-तरीकों, उचित सामाजिक व्यवहार, नागरिक अधिकारों और कर्तव्यों से लेकर सौंदर्य और यहां तक कि धार्मिक प्रशिक्षण तक सीखने और गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला को संदर्भित करता है। कुछ लोगों के लिए, मूल्य शिक्षा केवल कुछ गुणों और आदतों को शामिल करते हुए उचित व्यवहार और आदतों को विकसित करने का मामला है। ऐसी अवधारणा के विरोध में, यह बताया गया है कि मूल्य शिक्षा में अनिवार्य रूप से संज्ञानात्मक घटक होता है और इसे नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। वास्तव में, उचित तर्क के आधार पर नैतिक निर्णय लेने की क्षमता मूल्य शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण उद्देश्य है और इसे जानबूझकर विकसित किया जाना चाहिए। कुछ लोगों के अनुसार, बच्चे का नैतिक विकास स्कूल के सामाजिक जीवन से स्वतः ही होता है। समूह के सदस्य के रूप में बच्चा समूह के दृष्टिकोण, मूल्यों और सामान्य व्यवहार को आत्मसात करता है और लगातार समूह के मानदंडों के अनुसार खुद को ढालने की कोशिश करता है।

## मूल्य शिक्षा के उद्देश्य

शैक्षिक उद्देश्य उन तरीकों के स्पष्ट निरूपण को संदर्भित करते हैं जिनसे छात्रों को शैक्षिक प्रक्रिया द्वारा बदलने की अपेक्षा की जाती है। यानी, वे तरीके जिनसे वे अपनी सोच, अपनी भावनाओं और अपने कार्यों में बदलाव लाएंगे। उद्देश्य चाहे मूल्य शिक्षा के हों या किसी अन्य पाठ्यक्रम क्षेत्र के, वे मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, ज्ञानमीमांसीय जैसे कई कारकों पर निर्भर करते हैं।

### आधुनिक संदर्भ में मूल्य शिक्षा के उद्देश्य

उद्देश्य, विशेष रूप से मूल्य शिक्षा में, एक लौकिक आयाम रखते हैं। परंपरागत रूप से मूल्य शिक्षा के उद्देश्य धर्म और दर्शन पर आधारित थे। कोई धर्मनिरपेक्ष मूल्य शिक्षा नहीं थी और नैतिक सोच के विकास और स्वतंत्र नैतिक निर्णय की क्षमता के लिए बहुत कम गुंजाइश थी। आधुनिक दुनिया में ये लोगों पर की जाने वाली सामाजिक माँगों की विविधताएँ हैं। एक सभ्य व्यक्ति के पास कुछ न्यूनतम सामाजिक कौशल होने चाहिए। उसे उन लोगों के साथ सभ्य संबंध स्थापित करने होंगे जिनके साथ वह थोड़े समय के लिए या लंबे समय तक मिल सकता है। उसे अपनी निजी या सार्वजनिक क्षमता में व्यवसाय करना पड़ सकता है। उसे अपने राज्य, या अपने देश और दुनिया के नागरिक के रूप में कार्य करना होगा, साथ ही इन सभी संदर्भों में उचित भूमिकाएँ निभानी होंगी। उसके ऊपर कई अन्य माँगें भी की जाती हैं जिन्हें गिनाने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए, यह बताया गया है कि मूल्य शिक्षा को इन माँगों को पूरा करने के लिए व्यक्ति को तैयार करना चाहिए। यह स्पष्ट है कि इन्हें पारंपरिक रूप के कुछ 'करें और न करें' के रूप में पूरा नहीं किया जा सकता है।

### मूल्य शिक्षा के संज्ञानात्मक और भावात्मक आयाम उद्देश्य

सही अर्थों में शिक्षित होने का अर्थ है सही ढंग से सोचने में सक्षम होना, सही तरह की भावनाओं को महसूस करना और वांछित तरीके से कार्य करना। इसलिए मूल्य शिक्षा के उद्देश्यों को व्यक्तित्व विकास के तीनों चरणों से संबंधित होना चाहिए क्योंकि वे सही तरह के व्यवहार से संबंधित हैं। चूंकि ये चरण स्वयं एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, इसलिए यह सोचना गलत होगा कि मूल्य शिक्षा केवल ज्ञान, भावना या अकेले कार्रवाई से संबंधित है।

उपर्युक्त उद्देश्य शिक्षा प्रणाली के बारे में गांधीवादी विचारों को जानना है। यहाँ, शोधकर्ता ने गांधीजी के दार्शनिक विचारों, गांधीजी के सामाजिक दर्शन, गांधीजी के शैक्षिक दर्शन, गांधीजी द्वारा सुझाई गई शिक्षण पद्धति, गांधीजी की शिक्षा की विचारधारा, गांधीजी की वर्धा शिक्षा योजनाओं के बारे में उत्तरदाताओं के ज्ञान का पता लगाने की कोशिश की है। डेटा का उल्लेख और विस्तार से नीचे बताया गया है;

### तालिका 8: गांधीजी के दार्शनिक विचारों के बारे में उत्तरदाताओं का ज्ञान

क्रम सं.	गांधी के दार्शनिक विचार	हाँ		नहीं		कुल	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
1	ईश्वर में आस्था	132	82.5	28	17.5	160	100
2	व्यक्ति एक आध्यात्मिक प्राणी के रूप में	128	80	32	20	160	100
3	ईश्वर को जीवन का देवता मानना	116	72.5	44	27.5	160	100
4	सत्य	160	100	00	00	160	100
5	प्रेम	160	100	00	00	160	100
6	अहिंसा	160	100	00	00	160	100

विश्व दर्शन का अर्थ है ज्ञान की विद्या, यहाँ ज्ञान और ज्ञान एक ही चीज़ नहीं है। यह ज्ञान से कहीं बढ़कर है। ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन ज्ञान अनुभूत सत्य है। इसमें जांच शामिल है, लेकिन यह संबंध खोजने और निहितार्थों की खोज करने के लिए इससे परे जाता है। दर्शन जीवन की एक सुसंगत और व्यापक व्याख्या प्रदान करता है और इसके लक्ष्यों को परिभाषित करता है। यह जीवन के मूल स्रोत और उद्देश्यों की खोज करता है। यह वास्तविकता की प्रकृति की एक तार्किक जांच है (हेंडरसन)। दर्शन जीवन के एक निश्चित तरीके को इंगित करता है और जीवन और ब्रह्मांड को समग्र रूप से समझने और सराहने का भी प्रयास करता है। ज्ञान के व्यक्ति के रूप में गांधीजी सत्य और अहिंसा के दर्शन में विश्वास करते थे। यहाँ शिक्षा, गांधी के अनुसार, मानव प्रयास और तीक्ष्णता के अलावा और कुछ नहीं है। इसलिए दर्शन शिक्षा से अविभाज्य है।

उपर्युक्त तालिका दर्शाती है कि उत्तरदाताओं को गांधीजी के दार्शनिक विचारों के बारे में ज्ञान है। उपरोक्त तालिका दर्शाती है कि उत्तरदाताओं को गांधीजी के दार्शनिक विचारों के बारे में ज्ञान है। बहुमत यानी 82.5% उत्तरदाताओं ने कहा है कि उन्हें ईश्वर में विश्वास के गांधीवादी दार्शनिक दृष्टिकोण के बारे में ज्ञान है, और बाकी यानी 17.5% उत्तरदाताओं को इस बिंदु के बारे में कोई जानकारी नहीं है। बहुमत यानी 80% उत्तरदाताओं ने कहा है कि उन्हें आध्यात्मिक प्राणी के रूप में व्यक्ति के गांधीवादी दार्शनिक दृष्टिकोण के बारे में ज्ञान है अधिकांश यानी 72.5% उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें ईश्वर में विश्वास के गांधीवादी दार्शनिक विचारों के बारे में जानकारी है, और शेष यानी 27.5% उत्तरदाताओं ने इस बारे में स्पष्ट नहीं किया है। सभी उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की कि उन्हें गांधीवादी दार्शनिक दृष्टिकोण यानी सत्य, प्रेम, अहिंसा के बारे में जानकारी थी।

तालिका 9: उत्तरदाताओं का गांधीजी के सामाजिक दर्शन के बारे में ज्ञान

क्रम सं.	गांधीजी का सामाजिक दर्शन	हाँ		नहीं		कुल	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%

1	भाईचारा	160	100	00	00	160	100
2	नागरिकता	160	100	00	00	160	100
3	आर्थिक समानता	160	100	00	00	160	100
4	सर्वोदय समाज	160	100	00	00	160	100

गांधीजी का सामाजिक-आर्थिक दर्शन यद्यपि उनके दृष्टिकोण में अधिक अटकलें लगाता है, लेकिन यदि इस वर्तमान विश्व को शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व प्राप्त करना है, तो अव्यक्त समझ बहुत व्यावहारिक और साध्य भी है। सार्वभौमिक बंधुत्व गांधीजी का मूल विचार है, जिसके माध्यम से हम अधिकांश बीमार स्वस्थ प्रवृत्तियों से बच सकते हैं। सामाजिक दर्शन के तहत, गांधीजी के अनुसार, आर्थिक गतिविधि का उद्देश्य समुदाय के सभी सदस्यों को पाँच प्राथमिक आवश्यकताओं, अर्थात् भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल की गारंटी देना है। गांधीजी ने सर्वोदय समाज पर भी जोर दिया। जिसका अर्थ है कि इन सभी का उत्थान इसलिए है क्योंकि गांधीजी में एक स्थिर और वांछनीय समाज की अवधारणा है। सभी को समान होना चाहिए।

उपर्युक्त तालिका दर्शाती है कि उत्तरदाताओं को गांधीजी के सामाजिक दर्शन के बारे में क्या जानकारी है। सभी उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की है कि उन्हें भाईचारा, नागरिकता, आर्थिक समानता, सर्वोदय समाज का ज्ञान है।

तालिका 10: उत्तरदाताओं को गांधीजी के शैक्षिक दर्शन के बारे में क्या जानकारी है

क्रम सं.	गांधीजी का शैक्षिक दर्शन	हाँ		नहीं		कुल	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
1	सर्वांगीण विकास	160	100	00	00	160	100
2	चरित्र निर्माण	160	100	00	00	160	100
3	आत्मनिर्भरता	136	85	24	15	160	100
4	सांस्कृतिक विकास	124	77.5	28	17.5	160	100
5	सामाजिक उत्थान और कल्याण	88	55	72	45	160	100

शैक्षिक दर्शन शैक्षिक मुद्दों को तय करने में सोचने के तरीकों की व्याख्या करता है। गांधीजी ने एक ऐसी प्रणाली पर जोर दिया जिसे उन्होंने सभी के लिए बुनियादी शिक्षा कहा। और वह चाहते थे कि यह बुनियादी शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया हो। उनका मानना था कि उच्च साहित्यिक योग्यता और विज्ञान में सुरक्षित ज्ञान का उच्च स्तर अनिवार्य रूप से शिक्षा का गठन नहीं करता है। दूसरी ओर कुछ तथाकथित शिक्षित व्यक्ति अनपढ़ हो सकते हैं (गांधी)। दिलचस्प बात यह है कि खुशहाल और जीवंत समाज के विचारक के रूप में गांधी ने बुनियादी शिक्षा पर जोर दिया। यह बुनियादी शिक्षा मुख्य रूप से सभी सामाजिक मूल्यों का समावेश है, जिसमें प्रकृति और पर्यावरण के नियमों की समझ भी शामिल है। यह सद्भाव और सामाजिक सामंजस्य को प्रभावित करने के लिए व्यक्तिगत व्यवहार को प्रभावित करने के लिए ज्ञान के क्षेत्र के बारे में भी समझ है। शोधकर्ताओं ने बुनियादी शिक्षा की गांधीवादी योजना के आंतरिक दर्शन को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के रूप में वर्गीकृत किया है जिसमें नैतिक, भौतिक नैतिक और दार्शनिक आदि शामिल हैं। इन मूल्यों को गुप्त रूप से चरित्र निर्माण, आत्मनिर्भरता और आत्म-नियंत्रण और सामाजिक-सांस्कृतिक विकास के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। इस संबंध में, शोधकर्ता ने गांधीजी के उपर्युक्त शैक्षिक दर्शन को लिया है। तालिका में उत्तरदाताओं के गांधीजी के शैक्षिक दर्शन के बारे में ज्ञान की जांच की गई है। उपरोक्त तालिका दर्शाती है कि गांधीजी की विचारधारा, सर्वांगीण विकास और चरित्र निर्माण के बारे में उत्तरदाताओं के ज्ञान को सभी उत्तरदाताओं द्वारा जाना जाता है। बहुमत यानी 85% उत्तरदाताओं को आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक विकास (77.5%) (55% गांधीवादी शैक्षिक विचारधारा है; सभी उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की है कि उन्हें भाईचारा, नागरिकता, आर्थिक समानता, सर्वोदय समाज का ज्ञान है।

तालिका 11: उत्तरदाताओं का गांधीजी के बारे में ज्ञान शिक्षण पद्धति की सलाह दी

क्रम सं.	गांधीजी ने शिक्षण की विधि की सलाह दी	हाँ		नहीं		कुल	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
1	सहसंबंध	44	27.5	116	72.5	160	00
2	शिल्प के माध्यम से शिक्षण	160	00	160	00	160	00
3	जीने के द्वारा सीखना	140	87.5	20	12.5	160	00

गांधीजी ने विद्यार्थियों को पढ़ाने के तरीके भी सुझाए। कॉलेज को अपने दृष्टिकोण में रखते हुए, उन्होंने सोचा कि बुनियादी शिक्षा व्यवसायों के माध्यम से दी जानी चाहिए जैसे कि अनाज की खेती, डेयरी, कताई, बुनाई, बड़ईगरी, लोहार इत्यादि। गांधीजी ने पढ़ाने के कुछ पारंपरिक तरीकों की वकालत की।

(क) शिल्प के माध्यम से शिक्षा पर जोर दिया। यहाँ इस शिल्प के इर्द-गिर्द ही स्कूल में अन्य सभी विषय पढ़ाए जाएंगे।

(ख) मातृभाषा को यहाँ शिक्षण का माध्यम होना चाहिए इससे शिक्षा की प्रक्रिया स्वाभाविक और सार्थक बनती है।

(ग) करके सीखना गांधीवादी शिक्षा प्रणाली का मुख्य नारा है। इस प्रकार बच्चा किसी गतिविधि में भाग लेता है और अनुभव के माध्यम से सीखता है।

उपर्युक्त तालिका गांधीजी द्वारा सुझाई गई शिक्षण पद्धति के बारे में उत्तरदाताओं के ज्ञान को दर्शाती है।

तालिका 12: उत्तरदाताओं का शिक्षा के बारे में गांधीजी की विचारधाराओं के बारे में ज्ञान

क्रम सं.	गांधीजी की विचारधाराएँ शिक्षा	हाँ		नहीं		कुल	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
1	निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा	160	100	00	00	160	100
2	धार्मिक और नैतिक शिक्षा	160	100	00	00	160	100

उपरोक्त तालिका उत्तरदाताओं के गांधीजी की शिक्षा संबंधी विचारधाराओं के बारे में ज्ञान को दर्शाती है। दिखाए गए आंकड़ों के अनुसार, सभी उत्तरदाताओं को गांधीजी की शिक्षा संबंधी विचारधाराओं के बारे में जानकारी है।

तालिका 13: उत्तरदाताओं का गांधीजी की वर्धा शिक्षा योजनाओं के बारे में ज्ञान

क्रम सं.	गांधी के दार्शनिक विचार	हाँ		नहीं		कुल	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
1	7 से 14 वर्ष तक सभी के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा	108	67.5	52	32.5	160	100
2	शिल्प को शिक्षा का केंद्र बनाना	124	77.5	36	22.5	160	100
3	स्व-सहायक शिक्षा	68	42.5	92	57.5	160	100
4	मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना	72	45	88	55	160	100
5	अहिंसा की संस्कृति	160	00	00	00	160	100
6	नागरिकता का आदर्श	124	77.5	36	22.5	160	100
7	सहकारी जीवन	160	100	00	00	160	100

जैसा कि ऊपर दी गई तालिका में बताया गया है, उत्तरदाताओं को वर्धा शिक्षा का ज्ञान निम्न स्तर पर है, जैसा कि कोष्ठक में बताया गया है; 7 से 14 वर्ष तक सभी के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा (67.5%) शिक्षा का केंद्र शिल्प (77.5%), स्वावलंबी शिक्षा (42.5%), शिक्षा का माध्यम मातृभाषा (45%), अहिंसा संस्कृति (100%), नागरिकता का आदर्श (77.5%), सहकारी जीवन (100%)।

## निष्कर्ष

बुनियादी शिक्षा पर महात्मा गांधी के विचार न केवल उनके शैक्षिक दृष्टिकोण का परिचायक हैं, बल्कि यह एक समग्र और समावेशी समाज के निर्माण की उनकी परिकल्पना को भी दर्शाते हैं। गांधीजी का यह विश्वास था कि शिक्षा हाथ, हृदय और मस्तिष्क का संतुलित विकास करे। उन्होंने कुटीर उद्योग, हस्तकला और मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा को आत्मनिर्भर और प्रासंगिक बनाने पर जोर दिया। उनका दृष्टिकोण विशेष रूप से ग्रामीण भारत के लिए अत्यंत उपयोगी था, जहाँ शिक्षा को जीवनयापन और रोजगार से जोड़कर समृद्धि का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता था। व्यवहार, भावनाएँ और अनुभूति गांधीजी के शिक्षा पर विचारों के तीन पहलू थे जिन्हें हमारे वैचारिक ढांचे के हिस्से के रूप में पहचाना गया। जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, व्यवहार प्राथमिक शिक्षकों की मूल्य शिक्षा की समझ के लिए इतना केंद्रीय लगता है कि वे वास्तव में कुछ प्रकार के व्यवहार को 'गांधीजी के शिक्षा पर विचार' के रूप में सूचीबद्ध करते हैं।

## संदर्भ

1. देवदास, आर.पी., और राजम, वी. (2005)। उच्च शिक्षा का गांधीवादी दर्शन। गांधीवादी विकल्प: आत्म-साक्षात्कार के लिए शिक्षा। एड. सुरेश मिश्रा। नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, 93-110।
2. श्रीवास्तव, ए.पी., और कुमार, आर. (2021) प्रीस्कूल शिक्षा और बाल विकास पर महात्मा गांधी का दर्शन: एक प्रतिबिंब। *vf/kxe vad 21 % fnIEcj* ISSN: 2394-773X
3. चक्रवर्ती, पी., और पारोई, एस. शांति (जून 2022) शिक्षा पर महात्मा गांधी के विचार और इक्कीसवीं सदी में इसकी प्रासंगिकता। शोध संकल्प जर्नल (ISSN 2582-9033) खंड 2 (2)
4. बेहरा, एच. (2016)। पाठ्यक्रम बुनियादी शिक्षा के विशेष संदर्भ में महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा और अनुसंधान जर्नल, 2(1), 112-115।
5. जेना, पी. के. (2020)। महात्मा गांधी और बुनियादी शिक्षा। महात्मा गांधी पवित्र कर्म से अपवित्र मृत्यु तक (भाग-1) शीर्षक से संपादित पुस्तक में प्रकाशित संपादक- डॉ. चंदन कुमार, प्रकाशक- अनु बुक्स, 2020, आईएसबीएन-978-81-947224-7-2 (<https://anubooks.com/product/mahatma-gandhi-from-holy-deeds-to-unholy-death/>)
6. श्वेता, डी. (2017)। महात्मा गांधी और बुनियादी शिक्षा के बारे में उनका विचार: एक ऐतिहासिक मूल्यांकन। इंटरनेशनल जर्नल एडवांस इन सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज, 5(1)। इंटरनेशनल जर्नल एडवांस इन सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज ऑनलाइन उपलब्ध: [www.ijassh.com](http://www.ijassh.com)
7. गौर, एस. (2014)। रवींद्रनाथ टैगोर और एमके गांधी का शैक्षिक दर्शन। इंडियन स्टडीस रिसर्च जर्नल, 4(7)।
8. साहू, एन. , और बेहरा, एच. (2022)। वर्तमान संदर्भ में शिक्षा के गांधीवादी विचार की प्रासंगिकता। ISRA जर्नल <https://www.ijraset.com/best-journal/relevance-of-gandhian-thought-of-education-in-present-day-context/>
9. बिस्वास, एच. के. (2021)। गांधीजी की बुनियादी शिक्षा और आधुनिक शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता पर एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेड इन सांस्टिटिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट (IJTSRD) वॉल्यूम, 5।
10. थीपा, एस. (2020)। शिक्षा में गांधी का योगदान। SSRN 3599726 पर उपलब्ध है।
11. दाश, एन. महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन और 2018-2028 की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इसकी प्रासंगिकता: एक तुलनात्मक अध्ययन।
12. पांडे, पी., और मोहंती, डी.पी. (2018) समकालीन परिदृश्य में गांधी के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता। गांधीवादी विचार, 15.
13. डेका, एन. (2017)। क्या गांधीजी की बुनियादी शिक्षा प्रणाली अभी भी प्रासंगिक है? और विकास, 7(13), 40.

14. बाला, एस. (2005). शिक्षा की गांधीवादी अवधारणा-वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता. इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 531-548.